nqfu;k dh loZ"sB gLrh

उमदतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे हुसैन साहिब मुजतहिद ताबा सराह

अनुवादक – मु0 र0 आबिद साहिब

जब से मानवता का आरम्भ हुआ है और सर्वश्रेष्ठ सृष्टि (इन्सान) अस्तित्व में आयी उस समय तक धरती पर हज़ारों ही ऐसी हस्तियाँ संसार में आईं जिनके कर्म, आचरण, स्वभाव, जनसेवा, भक्ति, आज्ञापालन को ख़ालिक़ (सृष्टिकर्ता) ने दुनिया की ऊँच–नीच में इतना स्पष्ट किया कि हज़ारो बरस बीत जाने के बाद भी कालान्तर के बढ़ते हाथ उनकी याद दिलों से न मिटा सके और कभी न कभी भूलने वालों की कल्पना में उनकी तस्वीरें अपने स्पष्ट रूप–रेखा के साथ घूम ही जाती हैं जिनमें ज्ञान के दृश्य भी हैं और आचरण की कार्यशालाएँ भी हैं, विचार चिन्तण के मोहिनी दृश्य भी है और बेमिसाल सूझ–बूझ के चित्र, राजनीति के मार्गदर्शन भी हैं और शरीयत (धर्म–विधि) के निर्देशन भी।

वह हस्तियाँ भी दुनिया की आखों के सामने हैं जो बस प्रत्यक्ष संसार की सीमाओं के अन्दर अनुकरणीय चरित्र के मालिक थे और वह भी जो मिट जाने वाली दुनिया से आगे बढ़कर चरित्र के बाक़ी रहने वाले रास्तों पर चलने वाले रहे मगर जिसको देखिये उसके कार्यकलाप के आईने में या सिर्फ दुनिया दिखायी देती है या सिर्फ़ दीन (धर्म), सिर्फ़ राजनीति दिखायी देती है या शरीयत, केवल ज़ाहिर नज़र आता है या बातिन, सिर्फ कल्पना की ऊँचाइयाँ मिलती हैं या केवल कर्म की, लेकिन ऐसी हस्ती अन्तः जगत में कमज़ोर नज़र ने ढूँडी तो कोई न मिली जिसके एक कर्म बदल देने से पहलू (कोण) बदलते जाएँ, तस्वीरें बदलती जाएँ, साज–सज्जा बदलती जाएँ, फूल एक हो मगर खुशबू हर तरह की मौजूद, आइना एक हो मगर हर तस्वीर का जलवा, सूरज एक हो किन्तु हर रंग की किरणों का श्रोत, बिन्दु एक हो मगर विचार–परिधि का केन्द्र, अलबत्ता एक, हुसैन (अ0) और केवल हुसैन जिसको कुदरत ने अपने जमाल (सौंदर्य) बल्कि कमाल (पिनुर्णता) का वह बेमिसाल आइना बनाया था जिसने मानवता का लिबास पहनकर मानव जगत को शोभा दी, और ईशवरीय आचरण से गुणवान होकर हर कमाल का दृश्य प्रस्तुत किया। वह हुसैन (अ0) नहीं जो केवल शियों के इमाम हैं बल्कि वह हुसैन (अ0) जो अरब के चश्मो चिराग (आखें और दीपक), वह हुसैन (अ0) जो कुरैश के उत्थान के आकाश, वह हुसैन (अ0) जो जनाब हाशिम की आँखों के तारे, और हज़रत मुहम्मद (स0) के जिगर के टुक्ड़े, हज़रत अली (अ0)के दिल का आनन्द, संसार की महिलाओं की मुख्या जनाब सैय्यदा (स0) की गोदी की शोभा, वह हुसैन (अ0) जिस को खुदा ने शहादत के लिए, रसूल (स0) ने अपने दीन की रक्षा के लिए, अली (अ0) ने अपने शौर्य का वारिस किया, माँ ने अपनी इस्मत (निष्पापिता) का मुस्तहक़ (पात्र) बनाया। हसन (अ0) ने अपनी नियाबत के लिए छाँटा, इस्लाम जग ने इमामत की सनद (प्रमाण–पत्र) प्रदान की, यज़ीद ने अपने अत्याचारों का केन्द्र बनया, तलवारों ने सहन सीमा को परख देखा, नेज़ों ने दिल की गहराईयों को टटोला, तीरों ने अतिथि सत्कार की परीक्षा ली, प्यास ने सहनशीलता की हदें देखीं, हद से बढ़ती हुई गर्मी ने इंसान की ढंडक

से तुलना की, यज़ीद के टिड्डी दल लशकर (सेना) ने धैर्य की परीक्षा ली, यहाँ तक कि आख़िर कर्बला की धरती ने अपनी आशाओं की गोद में लेकर सुकून और चौन की नींद सुला दिया और दुनिया कुदरत (ईश्वर–शक्ति) के कमाल के इस प्रतिदर्शक के हालात, आचरण, चरित्र, ज्ञान व कर्म की महानता देखकर सौन्दर्य–मग्न हो गयी।

यही वह ज़ात (व्यक्तित्व) है जो हर भेद–भाव से ऊँचा, हर सीमाबद्धता से परे, हर विभाजन से ऊपर, सभी राष्ट्र, धर्म, सम्प्रदाय, समुदाय बल्कि संसार का दृष्टि–केन्द्र, धर्म के एतबार (सन्दर्भ) से मुसलमानों के इमाम, वीरता की दृष्टि से हर सेना का ध्वजवाहक (प्रमुख), राजनीति की दृष्टि से बड़े से बड़ा लीडर, आचरण के सम्पूर्ण संसार का नेता चरित्र से कार्यनीति का शिक्षक, इस्मत से हर मज़हब का कामिल इन्सान (सम्पूर्ण मनुष्य)।

हमारे नज़दीक यह तत्थ्य नकारा नही जा सकता है कि इमाम हुसैन (अ0) ने अपने पूरे जीवन काल में जो क़दम उठाया वह अल्लाह के दीन की सीमाओं के अन्दर और जो काम किया वह ख़ालिक़ (सृष्टिकर्ता) के बनाये विधान के अनुसार। कर्म का ख़ालिक़ की मर्ज़ी के अनुसार होना हुसैन (अ0) ही का काम था और नतीजे की ज़िम्मेदारी का भार सिर्फ ख़ालिक़ की कुदरत (शक्ति, सामर्थ्य) पर था। परन्तु कर्म की विशेषता यह थी कि हर खोजी निगाह को अपना ध्येय जन्नत के जवानों के इस सरदार (स्वर्ग के युवक प्रमुख) की जीवनी में कुछ ऐसे बेमिसाल अन्दाज़ से मिल गया कि हर जानकार इन्सान हुसैन (अ0) के चरित्र को अपनी कर्मनिधि बनाने के लिए खुशी से तैयार हो गया।

मानवता–जगत में यह वैभव केवल हुसैन (अ0) ही का है कि जितना–जितना समय बीतता जाता है उतना ही उतना शहादत का रंग निखरता जाता है और हुसैन (अ0) की कुर्बानी में ताज़गी पैदा होती जाती है। आज से कुछ सदी पहले मुसलमानों के अलावा कब किसी अन्य ने इस मज़लूम (उत्पीड़ित) के कारनामों से सबक़ लेने की अपने अनुयायियों को शिक्षा दी थी। परन्तु अब तेरह सौ साल बीत जाने के बाद शहादत का रंग इतना साफ हुआ कि हर मज़हब वाला हर सम्प्रदाय का मानने वाला, हर तरह की राजनीति का प्रमी अपनी क़ौम और अपने समुदाय के सामने हुसैन (अ0) की मिसाल (उदाहरण) प्रस्तुत करना अपनी तबलीग़ (नीति–संचार) का महान अंग समझ रहा है।

यदि मौक़े की मुनासिबत (सामैचित्व) आज्ञा देती तो मैं बिला मुबालिग़ा (अतिश्योक्ति) सैकड़ों ऐसे लीडरों और धर्मनताओं के नाम और उनके कथन प्रस्तुत कर सकता था जो हुसैन (अ0) इब्ने अली (अ0) के अनुसरण और अनुयाय और उनके पदचिन्हों पर चलने की दुनिया से फरमाईश कर चुके और फरमाईश कर रहे हैं।

न मेरे पास वक़्त है और न इतनी गुंजाईश है और फिर इस वजह से कि मेरा उपरोक्त कथन कम से कम हिन्दुस्तान में तो नकारने योग्य नहीं। क्या दुनिया में कोई और भी हस्ती ऐसी सामने लायी जा सकती है जो यूँ दुनिया के समस्त धर्मों, राष्ट्रों के लिए मार्गदर्शक बन सकी हो। नहीं हरगिज़ नहीं। यह हुसैन (अ0) हैं, केवल हुसैन (अ0) जिनकी मुसीबतों की याद ताज़ा करने का ज़माना मुहर्रम है और इसी मुहर्रम माह से हिजरी सन आरम्भ होता है और मुझे यक़ीन है कि दुनिया के न्यायप्रिय हुसैन (अ0) और उनके मानने वालों को हरगिज़ (कदापि) न भूलेंगे जो सबके सब मज़लूम की फिदाई (बलिहारी) और ज़ालिम (अत्याचारी) के दुश्मन हैं।